मांग (Demand)

By श्रीमती अनीता अधिकारी बसेड़ा
प्रवक्ता रा0इ0का0आठगांवशिलिंग

साधारण अर्थों में 'इच्छा', 'आवश्यकता' और मांग शब्दों को पर्यायवाची माना जाता है, किन्तु अर्थशास्त्र में ये तीनों शब्द अपना अलग–अलग अर्थ रखते हैं। मानवीय इच्छाएं अनन्त होती हैं, जिन इच्छाओं की पूर्ति के लिए सीमित साधन व्यय करने को हम तैयार होते हैं, वे इच्छाएँ हमारी आवश्यकता बन जाती हैं। जिन आवश्यकताओं को मानव पूरा कर लेता है, ''मांग'' (Demand) कहलाती है।

''मांग''– अभिप्राय एवं परिभाषाएँ

'मांग' की अवधारणा से तात्पर्य उस वस्तु की मात्रा से है, जिसे एक उपभोक्ता एक निश्चित समय व निश्चित कीमत पर खरीद सकता है।

अतः किसी वस्तु व सेवा की मांग निम्न तत्वों पर निर्भर करती है–

(i) **वस्तु व सेवा की इच्छा।**

(ii) **खरीदनें के लिए पर्याप्त साधन (आय)।**

(iii) **साधन (आय) व्यय करने की तत्परता।**

(iv) **एक निश्चित कीमत।**

(v) **निश्चित समय।**

प्रो0 जे0एस0 मिल के अनुसार **''मांग''** शब्द का अभिप्राय *''मांगी गयी उस मात्रा से लगाया जाता है, जो एक निश्चित कीमत पर खरीदी जाती है।''*

मांग के निर्धारक तत्व

(i) **वस्तु की उपयोगिता–** उपयोगिता का अर्थ है आवश्यकता, जो वस्तु अधिक उपयोगी होती है, उसकी मांग अधिक होगी तथा कम उपयोगिता वाली वस्तु की मांग कम होगी।

(ii) **सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत–** सम्बन्धित वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं–

(a) स्थानापन्न वस्तुएँ–स्थानापन्न का सरल अर्थ होता है ***एक दूसरे के स्थान पर।*** अतः ऐसी वस्तुएँ जिनका एक–दूसरे के बदले प्रयोग किया जाता है, स्थानापन्न वस्तुएँ कहलाती हैं। जैसे– चीनी–गुड़, चाय–कॉफी आदि।

(b) पूरक वस्तुएँ– 'पूरक' का अर्थ है ***पूरा करना***। अतः ऐसी वस्तुएँ जिनका उपयोग एक साथ किया जाता है, पूरक वस्तुएँ कहलाती हैं।
उदाहरण– कार–पैट्रोल, स्याही–कलम, डबल रोटी–मक्खन आदि।

स्थानापन्न वस्तुओं में यदि एक वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, तो दूसरी वस्तु की मांग में वृद्धि हो जाती है। पूरक वस्तुओं में एक की कीमत में वृद्धि दूसरे की मांग को कम कर देती है।

(iii) **<u>वस्तु की कीमत</u>–** वस्तु की कीमत व वस्तु की मांग में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। कीमत के बढ़ने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है।

(iv) **<u>आय स्तर</u>–** उपभोक्ता की आय जितनी अधिक होगी, उसकी मांग उतनी ही अधिक होगी।

(v) **<u>धन का वितरण–</u>** धन के वितरण से अभिप्राय है समाज में धनी व निर्धन के बीच की असमानता। वस्तु की मांग पर धन के वितरण का भी प्रभाव पड़ता है। समान धन वितरण से वस्तुओं और सेवाओं की मांग बढ़ती है।

(vi) **<u>रूचि, फैशन आदि–</u>** वस्तु की मांग पर उपभोक्ता की रूचि, फैशन, आदत, प्रचलित फैशन आदि का भी प्रभाव पड़ता है।

(vi) **<u>भविष्य में कीमत परिवर्तन की आशा</u>**– वस्तु की भविष्य में कीमत परिवर्तन की आशा का भी मांग पर प्रभाव पड़ता है। भविष्य में कीमत कम होने की आशा में उपभोक्ता उस वस्तु की मांग कर देता है तथा कीमत के बढ़ने की सम्भावना में वस्तु की मांग बढ़ा देता है।

(vii) **<u>अन्य निर्धारक तत्व–</u>**

(a) जनसंख्या का आकार।

(b) जलवायु।

(c) मौसम आदि।

<u>मांग फलन</u>

मांग फलन किसी वस्तु व सेवा की मांग व उसके निर्धारक तत्वों के सम्बन्ध को व्यक्त करता है।

$$D_x = f(P_x, P_r, Y, T, E, P, Y_d)$$

(यहां D_x= **'x'** वस्तु की मांग ; P_x=**'x'** वस्तु की कीमत ; P_r= सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत ; **Y=** उपभोक्ताओं की आय ; **T=** उपभोक्ताओं की रूचि ; **E=** भविष्य में कीमत बढ़ने की आशा; **P=** जनसंख्या का आकार; Y_d = आय का वितरण।)

मांग तालिका

वह तालिका या सारणी, जिसमें कीमत और खरीदी गयी मात्रा के सम्बन्ध को प्रकट किया जाता है, मांग तालिका कहलाती है।

मांग तालिका के प्रकार

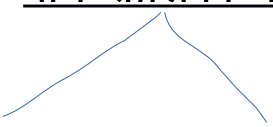

व्यक्तिगत मांग तालिका बाजार मांग तालिका

(a) व्यक्तिगत मांग तालिका– किसी निश्चित समय में एक व्यक्ति की विभिन्न कीमतों पर मांग को प्रदर्शित करने वाली तालिका व्यक्तिगत मांग तालिका कहलाती है।

व्यक्तिगत मांग तालिका

प्रति इकाई कीमत (रूपये में)	उपभोक्ता 'A'द्वारा मांगी गयी मात्रा
1 10	01
2 08	03
3 06	04
4 04	06
5 02	08

(b) बाजार मांग तालिका– बाजार मांग तालिका समस्त बाजार में किसी समय बिन्दु पर विभिन्न कीमतों पर वस्तु की मांग के योग को प्रदर्शित करती है।

बाजार मांग सारणी

1	2	3	4
दूध की कीमत	उपभोक्ता 'A' की मांग (लीटर में)	उपभोक्ता 'B'की मांग (लीटर में)	बाजार मांग = उपभोक्ता 'A'की मांग+उपभोक्ता 'B'की मांग
10	05	07	05+ 07 = 12
15	04	06	04+06= 10
20	03	05	03+05= 08

25	02	04	02+04= 06

मांग वक्र

मांग तालिका को जब रेखाचित्र के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, तब उसे मांग वक्र कहते हैं।

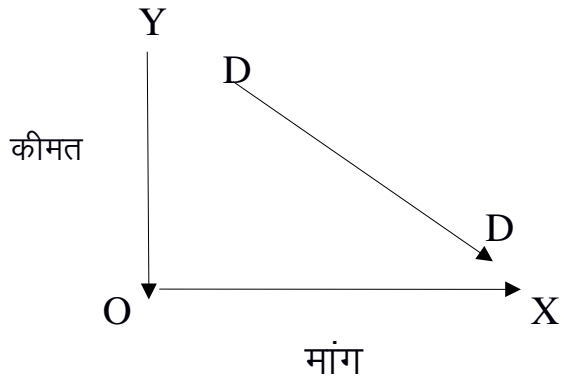

उपरोक्त रेखा चित्र में 'X' अक्ष पर मांग तथा 'Y' अक्ष पर कीमत को प्रदर्शित किया गया है तथा वक्र 'DD' मांग वक्र है।

मांग का नियम

अन्य बातें सामान्य रहने पर मांग का नियम यह बताता है कि वस्तु की कीमत एवम् वस्तु की मात्रा में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है। अर्थात वस्तु की कीमत बढ़ने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है तथा कीमत के कम हो जाने पर मांग बढ़ जाती है।

मांग का नियम– एक गुणात्मक कथन है। यह नियम केवल कीमत और मांग के परिवर्तन की दिशा बताता है, परिवर्तन की मात्रा को नहीं।

मांग के नियम की मान्यताएँ (''अन्य बातें समान रहें'' वाक्यांश का अर्थ)

(i) उपभोक्ता की आय में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(ii) रूचि, फैशन, पसन्द आदि में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(iii) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(iv) भविष्य में कीमत में परिवर्तन की आशा नहीं होनी चाहिए।

मांग के नियम के अपवाद

कुछ दशाओं में कीमत और मांग का विपरीत सम्बन्ध क्रियाशील नहीं होता है, उसे मांग के नियम के अपवाद के रूप में जाना जाता है, ये अपवाद है।

(i) <u>भविष्य में कीमत वृद्धि की सम्भावना–</u> कई कारणों से वस्तु की कीमत भविष्य में बढ़ जाती है या कीमत वृद्धि की सम्भावना बनी रहती है, उस स्थिति में मांग का नियम लागू नहीं होता है।

(ii) <u>प्रतिष्ठासूचक वस्तुएं–</u> प्रतिष्ठासूचक वस्तुएं वो होती हैं, जिन वस्तुओं की मांग करके समाज का धनी वर्ग अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करना चाहता है। अतः ऊंची कीमत वाली वस्तुओं को अधिक क्रय कर समाज में अपनी प्रतिष्ठा प्रदर्शन करता है। इस दशा में मांग का नियम लागू नहीं होता है।

(iii) <u>उपभोक्ता की अज्ञानता–</u> जब उपभोक्ता अपनी अज्ञानता के कारण ऊंची कीमत देकर यह अनुभव करता है कि उसने अधिक टिकाऊ एवम् श्रेष्ठ वस्तु खरीदी है, तब मांग का नियम लागू नहीं होता है।

(iv) <u>गिफिन का विरोधाभास–</u> **'गिफिन'** शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इंगलैण्ड के अर्थशास्त्री रॉबर्ट गिफिन द्वारा किया गया। उनके अनुसार दो प्रकार की वस्तुएं होती हैं।

(a) सामान्य वस्तुएँ।

(b) गिफिन या घटिया वस्तुएँ।

(a) <u>सामान्य वस्तुएँ–</u> उपभोक्ता की आय बढ़ने पर जिन वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है, वे सभी सामान्य वस्तुएँ कहलाती हैं।
उदाहरण–चावल, गेंहूँ, कपड़े आदि।

(b) <u>गिफिन या घटिया वस्तुएँ–</u> उपभोक्ता की आय बढ़ने पर जिन वस्तुओं की मांग कम हो जाती है, उन्हें गिफिन या घटिया वस्तुएं कहा जाता है।
उदाहरण– मोटा अनाज, मोटा कपड़ा आदि।

मांग का नियम गिफिन या घटिया वस्तुओं के सन्दर्भ में लागू नहीं होता है।

सामान्य वस्तु या गिफिन वस्तु में अन्तर

सामान्य वस्तु	*गिफिन/घटिया वस्तु*
1. सामान्य वस्तु में मांग का नियम लागू होता है।	गिफिन/घटिया वस्तु में मांग का नियम लागू नहीं होता है।
2. सामान्य वस्तु की मांग वक्र का ढलान ऊपर से नीचे, बायीं से दायीं ओर होता है। 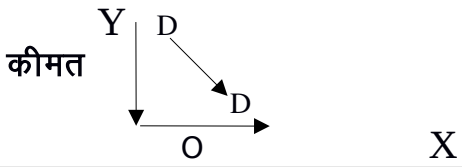 	गिफिन/घटिया वस्तु की मांग का ढलान नीचे से ऊपर की ओर होता है। 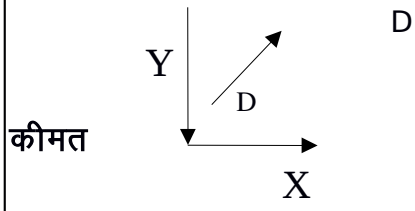
सामान्य वस्तु का आय प्रभाव 3. धनात्मक होता है अर्थात् आय बढ़ने पर वस्तु की मांग बढ़ती है। 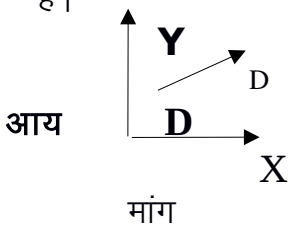 	गिफिन/घटिया वस्तु का आय प्रभाव ऋणात्मक होता है अर्थात् आय बढ़ने पर वस्तु की मांग कम हो जाती है। 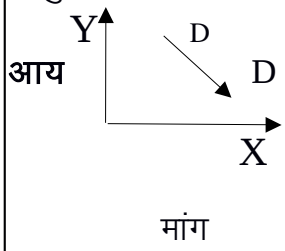

मांग में परिवर्तन

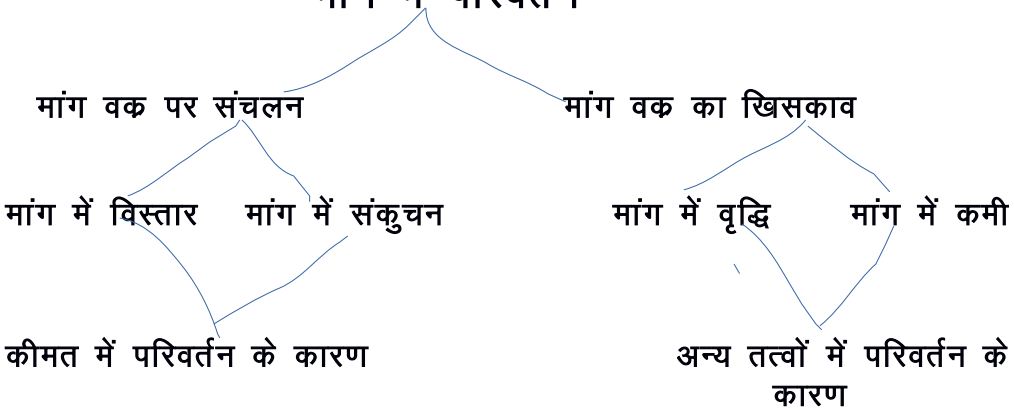

<u>मांग में परिवर्तन मुख्य रूप से दो कारणों से होते हैं–</u>

(i) कीमत में परिवर्तन के कारण।

(ii) अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण।

(i) <u>कीमत में परिवर्तन के कारण मांग में परिवर्तन अथवा एक ही मांग वक्र पर संचलन</u>– जब किसी वस्तु की मांग में परिवर्तन कीमत में परिवर्तन के कारण होती है। उसे एक ही मांग वक्र पर संचलन कहते हैं। इस स्थिति में अन्य तत्व स्थिर रहते हैं।

मांग में इस प्रकार के परिवर्तन मांग का विस्तार एवम् मांग का संकुचन उत्पन्न करते हैं।

(a) <u>मांग का विस्तार–</u> अन्य बातों के समान रहने पर जब वस्तु की कीमत में कमी होने से वस्तु की अधिक मात्रा खरीदी जाती है, तब उपभोक्ता अपने उसी मांग वक्र पर दायें या नीचे की ओर स्थानान्तरित होता है। इस स्थिति को मांग का विस्तार कहते हैं।

<u>तालिका– मांग का विस्तार।</u>

संतरे की कीमत प्रति इकाई (`)	संतरे की मांग (इकाई)
05	10
03	20

<u>चित्र</u>

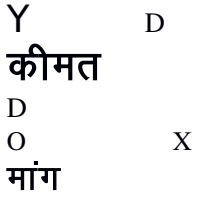

(b)<u>मांग का संकुचन–</u>अन्य बातों के समान रहने पर जब वस्तु की कीमत अधिक हो जाने के कारण वस्तु की कम मात्रा खरीदी जाती है, तब उपभोक्ता अपने उसी मांग वक्र पर बायीं या ऊपर की ओर स्थानान्तरित होता है। इस स्थिति को मांग का संकुचन कहते हैं।

<u>तालिका– मांग का संकुचन।</u>

संतरे की कीमत प्रति इकाई (`)	संतरे की मांग (इकाई)
03	20
05	10

<u>चित्र</u>

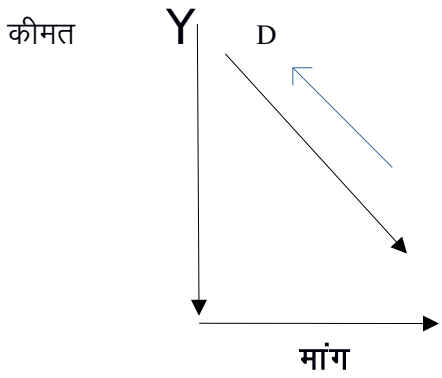

(2) <u>अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण मांग में परिवर्तन–</u> कीमत के स्थिर रहने पर भी अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण मांग में जो परिवर्तन होता है, उसे मांग वक्र का खिसकाव कहते हैं। अन्य तत्वों में परिवर्तन मांग में वृद्धि या मांग में कमी करते हैं।

(i) <u>मांग में वृद्धि–</u> कीमत के स्थिर रहने पर अन्य तत्वों (आय, सम्बन्धित वस्तु की कीमत, रूचि, फैशन, जनसंख्या का आकार आदि) में परिवर्तन के कारण जब मांग वक्र बायें से दायीं ओर खिसक जाता है, उसे मांग में वृद्धि कहते हैं।

<u>तालिका– मांग में वृद्धि।</u>

प्रति इकाई कीमत (`)	मांग
10	05
10	10

चित्र

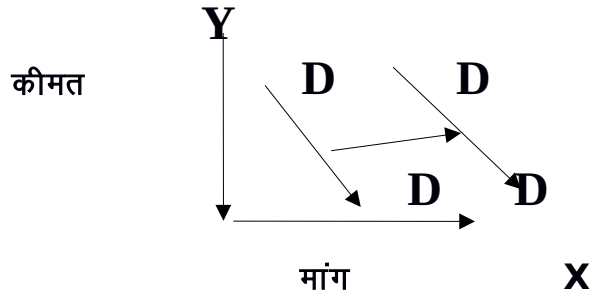

(ii) **<u>मांग में कमी–</u>** कीमत के स्थिर रहने पर भी अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण वक्र दायें से बायें ओर खिसक जाता है, उसे मांग में कमी कहते हैं।

<u>तालिका– मांग में कमी।</u>

प्रति इकाई कीमत (`)	मांग
10	10
10	05

चित्र

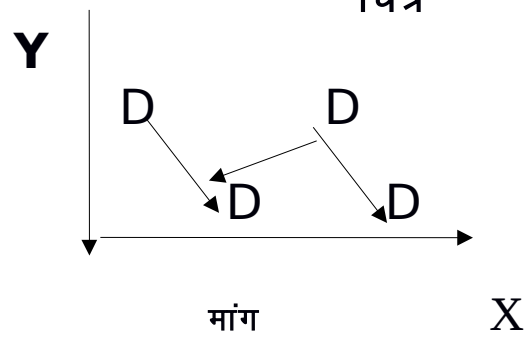

<u>मांग की कीमत लोच</u>

मांग की कीमत लोच किसी वस्तु की कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन तथा उस वस्तु की मांग में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुपात है।

$$\text{मांग की कीमत लोच(ed)} = \frac{\text{मांगी गयी मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

मांग की लोच एक परिणात्मक कथन है। यह मांग के नियम में होने वाले परिवर्तन की मात्रात्मक माप प्रस्तुत करता है।

मांग की लोच की श्रेणियां

मांग की लोच की पांच श्रेणियां हैं–

मांग की लोच की श्रेणियां

1. सापेक्षतः लोचदार मांग (ed >1)
   (इकाई से अधिक लोचदार मांग)
2. सापेक्षतः बेलोचार मांग (ed <1)
   (इकाई से कम लोचदार मांग।
3. इकाई लोचदार मांग (ed =1)
4. पूर्ण बेलोचदार मांग (ed =0)
5. पूर्ण लोचदार मांग(ed =∞)

(i)<u>सापेक्षतः लोचदार मांग(इकाई से अधिक लोचदार मांग)(ed >1)</u>– जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप उसकी मांग में अधिक आनुपातिक परिवर्तन हो जाता है, तब ऐसी वस्तु की मांग को इकाई से अधिक लोचदार मांग कहते हैं।

चित्र

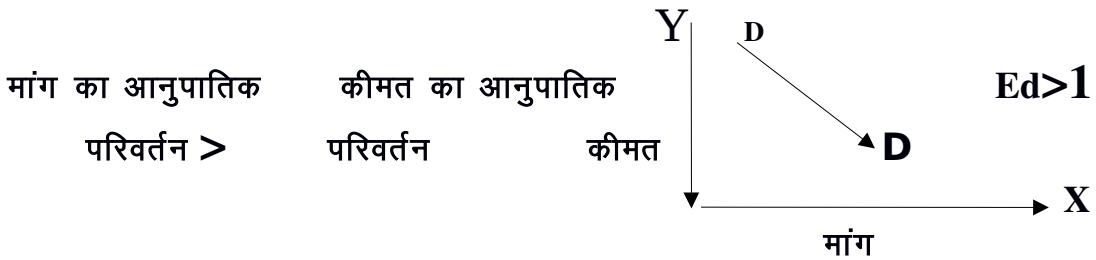

(ii) <u>सापेक्षतः बेलोचदार मांग(इकाई से कम लोचदार मांग)(ed<1)</u>– जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने के फलस्वरूप उसकी मांग में कम आनुपातिक परिवर्तन हो जाता है, तब ऐसी वसतु की मांग को इकाई से कम लोचदार मांग कहते हैं।

चित्र

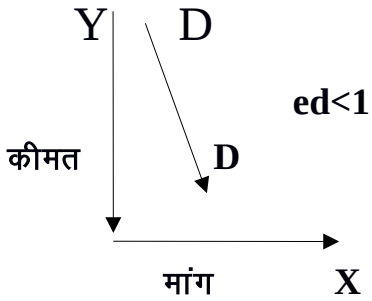

कीमत का आनुपातिक परिवर्तन > मांग का आनुपातिक परिवर्तन

ed<1

(iii) <u>इकाई लोचदार मांग</u>(Ed =1)– जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग में भी उसी अनुपात में परिवर्तन होता है, ऐसी वस्तु की मांग को इकाई लोचदार मांग कहा जाता है।

चित्र

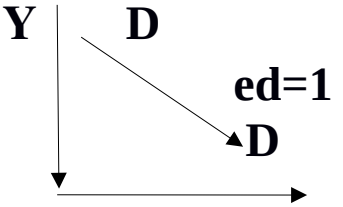

कीमत का आनुपातिक परिवर्तन = मांग का आनुपातिक परिवर्तन

(iv) <u>पूर्णतः बेलोचदार मांग</u> (Ed = 0) जब किसी वस्तु की कीमत के परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी मांग में कोई परिवर्तन नहीं होता है तो ऐसी मांग को पूर्णतः बेलोच मांग कहा जाता है।

मांग का आनुपातिक परिवर्तन = 0 (शून्य)

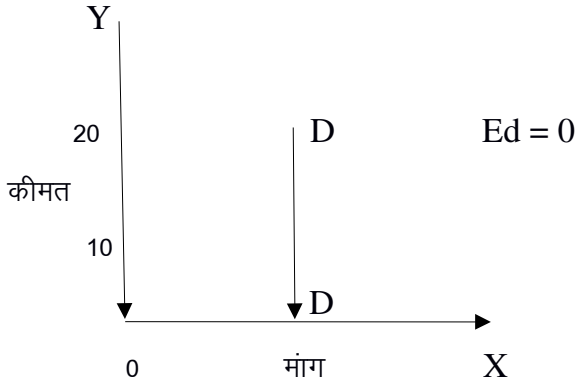

(v) पूर्णतया लोचदार मांग Ed = ∞ - जब किसी वस्तु की कीमत में नगण्य परिवर्तन होने पर अथवा परिवर्तन न होने पर भी मांग में अत्यधिक परिवर्तन होता रहता है, तब ऐसी वस्तु की मांग को पूर्णतया लोचदार मांग कहा जाता है।

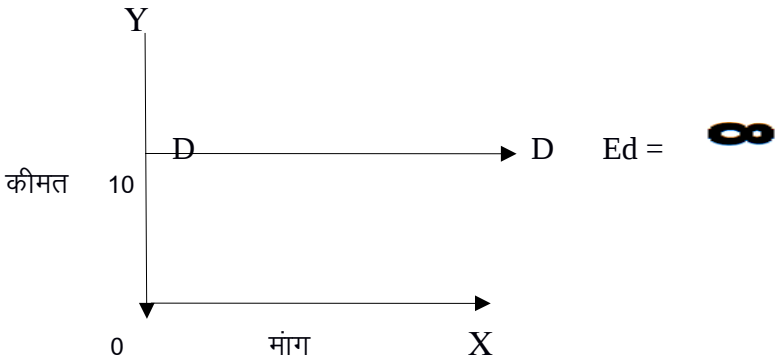

मांग की लोच को मापने की रीतियां–

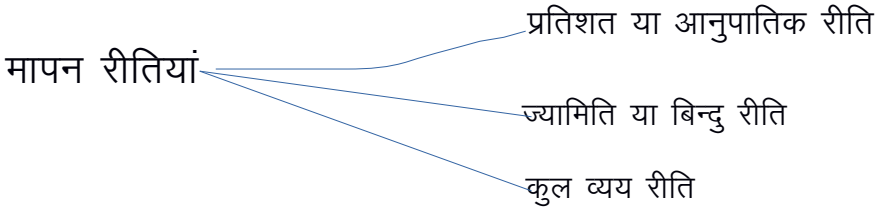

प्रतिशत या आनुपातिक रीति– इस रीति का प्रतिपादन प्रो0 ¶लक्स ने किया। इस रीति में मांग की लोच का अनुमान लगाने के लिए मांग में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन को कीमत में B होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से भाग कर दिया जाता है।

सूत्र– Ed (-)= मांग में आनुपातिक परिवर्तन

कीमत में आनुपातिक परिवर्तन

मांग में आनुपातिक परिवर्तन = मांग में परिवर्तन

———————— X 100

प्रारम्भिक मांग

कीमत में आनुपातिक परिवर्तन = कीमत में परिवर्तन

———————— X 100

प्रारम्भिक कीमत

अतः $\frac{Q1 - Q}{Q}$ $Q1-Q= \Delta Q$

$Ed= \frac{P1-P}{P}$ $P1-P= \Delta P$

$Ed= (-) \frac{\Delta Q}{Q} \times \frac{P}{\Delta P}$

$Ed= \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$

उपरोक्त सूत्र में–

P = प्रारम्भिक कीमत
P1 = नई कीमत
Q = प्रारम्भिक मांग
Q1 = नई मांग
Δ = परिवर्तन

<u>प्रतिशत रीति का उदाहरण–</u> `4 की कीमत पर एक वस्तु की 25 इकाईयों की मांग है। वस्तु की कीमत बढ़कर `5 हो जाती है। परिणामस्वरूप वस्तु की मांग घटकर 20 इकाईयां हो जाती है। कीमत लोच की गणना कीजिए।

उत्तर– प्रारम्भिक कीमत (P)= `4

नई कीमत **P1=** **`5**

कीमत में परिवर्तन **ΔP=P1-P**

= 5-4

=1

प्रारम्भिक मांग **Q = 25** इकाईयां

नई मांग **Q1 = 20** इकाईयां

मांग में परिवर्तन **=Q1-Q**

ΔQ= 20-25

= 5

मांग की कीमत लोच $= \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$

$= \frac{4}{5} \times \frac{1}{25}$

$= \frac{20}{25}$

=0.8

(-)Ed = 0.8 {इकाई से कम लोचदार मांग}

<u>ज्यामितीय या बिन्दु रीति –</u> इस ज्यामितीय रीति में मांग वक्र के किसी बिन्दु पर मांग की लोच ज्ञात करने के लिए उस बिन्दू पर एक स्पर्श रेखा खींची जाती है।

ज्यामितीय रीति के आधार पर

$$Ed = \frac{\text{निचला भाग}}{\text{ऊपर का भाग}}$$

<u>कुल व्यय रीति–</u> इस रीति का प्रतिपादन प्रो0 मार्शल ने किया। इस रीति में यह ज्ञात किया जाता है कि वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने से कुल व्यय में कितना और किस दिशा में परिवर्तन हुआ है।

कुल व्यय = वस्तु की कीमत x वस्तु की मांग

इस रीति द्वारा मांग की लोच की केवल तीन श्रेणियों का आंकलन किया जा सकता है।

(i) **<u>इकाई के बराबर मांग लोच</u>–** यदि कीमत में वृद्धि या कमी होने पर भी कुल व्यय स्थिर रहता है, तब मांग की लोच इकाई के बराबर होती है।

(ii) **<u>इकाई से अधिक मांग लोच–</u>** यदि कीमत के घटने पर कुल व्यय बढ़ता है अथवा कीमत के बढ़ने पर कुल व्यय घटता है, तब मांग की लोच इकाई से अधिक होगी।

(iii) **<u>इकाई से कम मांग लोच–</u>** यदि कीमत के घटने पर कुल व्यय घटता है अथवा कीमत के बढ़ने पर कुल व्यय बढ़ता है, तब मांग की लोच इकाई से कम होती है।

	वस्तु की कीमत (`)	वस्तु की मांग (इकाई)	कुल व्यय(`) (कीमत x मांग)	मांग की लोच
A	4 5	5 4	4x5=20 5x4=20	इकाई लोच (व्यय में कोई परिवर्तन नहीं)
B	4 5	20 10	4x20=80 5x10=50	इकाई से अधिक लोच (कीमत बढ़ने पर व्यय कम)
B	4 5	20 19	4x20=80 5x19=95	इकाई से कम लोच (कीमत बढ़ने पर व्यय अधिक)

<u>व्यय विधि का उदाहरण–</u> जब एक वस्तु की कीमत 10 रूपये प्रति इकाई से घटकर 9 रूपये हो जाती है तो उसकी मांग 9 इकाई से बढ़कर 10 इकाई हो जाती है। व्यय रीति का प्रयोग करते हुए मांग की कीमत लोच ज्ञात करें।

वस्तु की कीमत (`)	वस्तु की मांग (इकाई)	कुल व्यय(`)	मांग की लोच(कीमत x मांग)
10 9	9 10	10x9=90 9x10=90	इकाई लोच Ed= 1

मांग की कीमत लोच इकाई के बराबर है, क्योंकि कीमत में वृद्धि या कमी का कुल व्यय पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

<u>प्रश्न 1–</u> मांग व इच्छा में क्या अन्तर है?

<u>उत्तर–</u> एक निश्चित कीमत पर एक उपभोक्ता किसी की जितनी मात्रा खरीदने को इच्छुक और योग्य होता है, उसे मांग कहते है। इच्छा अनन्त होती है तथा उनका पूर्ण होना आवश्यक नहीं होता है।

<u>प्रश्न 2–</u> मांग फलन क्या है?

<u>उत्तर–</u> मांग फलन किसी वस्तु के लिए मांग तथा इसके निर्धारक तत्वों (कारण) के बीच कार्यात्मक सम्बन्ध को व्यक्त करता है।

<u>प्रश्न 3–</u> मांग का नियम क्या है?

<u>उत्तर–</u> मांग का नियम वस्तु की कीमत तथा उसकी मांगी गयी मात्रा के बीच विपरीत सम्बन्ध को व्यक्त करता है।

अन्य बाते सामान्य रहने पर कीमत के बढ़ने पर मांग कम हो जाती है तथा कीमत के कम होने पर मांग बढ़ जाती है।

<u>प्रश्न 4–</u> स्थानापन्न वस्तुएं क्या है?

<u>उत्तर–</u> स्थानापन्न वस्तुएं वे वस्तुएं होती है जो एक दूसरे के बदले एक ही उद्देश्य के लिए प्रयोग में लायी जाती है।

उदाहरण– चाय व कॉफी, गुड़ व चीनी आदि।

<u>प्रश्न 5–</u> मांग की लोच से क्या अभिप्राय है?

<u>उत्तर–</u> मांग की कीमत लोच कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन तथा मांग में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन का अनुपात है।

$$Ed = \frac{\text{मांग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

<u>मांग हेतु सन्दर्भ सूची</u>

(1) NCERT पाठ्य पुस्तक कक्षा–12

(2) अर्थशास्त्र डा0 अनुपम अग्रवाल एवम् श्रीमती शरद अग्रवाल, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन्स।

(3) GENERAL ECONOMICS BOARD OF STUDIES- The Institute of Chartered Accountants of India.

कक्षा–12
विषय– अर्थशास्त्र
पाठ संख्या– 2